॥ श्री अन्नपूर्णा माता के प्रमुख मंत्र ॥

॥ ॐ अन्नपूर्णायै नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री अन्नपूर्णा माता के प्रमुख मंत्र ॥

1. मूल मंत्र

ॐ अन्नपूर्णायै नमः॥

जप संख्या: 108 बार प्रतिदिन।

2. बीज मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अन्नपूर्णायै नमः॥

फल: अन्न, धन, समृद्धि तथा परिवार में सुख-शांति की प्राप्ति।

3. अन्नपूर्णा गायत्री मंत्र

ॐ भगवत्यै विद्महे
माहेश्वर्यै धीमहि।
तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात्॥

फल: माता अन्नपूर्णा की कृपा, बुद्धि, वैभव और अन्न की कभी कमी न होना।

4. प्रसिद्ध अन्नपूर्णा प्रार्थना मंत्र

अन्नपूर्णे सदापूर्णे
शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं
भिक्षां देहि च पार्वति॥

अर्थ: हे सदैव पूर्ण रहने वाली, भगवान शंकर की प्राणवल्लभा माता अन्नपूर्णा! मुझे ज्ञान, वैराग्य तथा जीवन के लिए आवश्यक दिव्य भिक्षा प्रदान करें।

5. ध्यान मंत्र

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी।
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी॥
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी।
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी॥

जप विधि

प्रातः स्नान कर स्वच्छ पीले या सफेद वस्त्र धारण करें।
माता अन्नपूर्णा के चित्र या विग्रह के समक्ष दीपक एवं धूप प्रज्वलित करें।
नैवेद्य में खीर, चावल, गेहूँ, गुड़, फल या घर का बना सात्त्विक भोजन अर्पित करें।
रुद्राक्ष या कमलगट्टे की माला से 108 बार मंत्र का जप करें।
जप के अंत में माता से प्रार्थना करें कि आपके घर में अन्न, धन, स्वास्थ्य और सद्बुद्धि की कभी कमी न हो।

विशेष: अन्नपूर्णा जयंती, नवरात्रि, सोमवार तथा प्रतिदिन मध्याह्न या संध्या समय इन मंत्रों का जप अत्यंत शुभ माना जाता है।